शारदा ग्रंथमाला-1

शारदा

गाँव, तीर्थ और विद्यापीठ

संजीवनी शारदा केन्द्र

नमस्ते शारदे देवि काश्मीरपुरवासिनी।
त्वामहं प्रार्थये नित्यं विद्या ज्ञानञ्च देहि मे।।

लेखक

प्रोफेसर भूषण लाल कौल

डी.लिट्

अध्यक्ष

संजीवनी शारदा केन्द्र

आनन्द नगर, बोड़ी-जम्मू

प्रकाशक

संजीवनी शारदा केन्द्र, आनन्द नगर जम्मू

शक्तिचाप शरघण्टिका सुधापात्र
रत्न कलशोल्लसत्कराम्।
पूर्णचन्द्रवदनां त्रिलोचनां
श्री शारदां नमत सर्वसिद्धिदाम्।।

कश्मीर के प्रसिद्ध तीर्थ स्थल हैं – स्वामी अमरनाथ, चक्रेश्वरी शारिका देवी, हारी पर्वत, तुलामूला में स्थित राज्ञण्या देवी (राज्ञी देवी), खिवन में ज्वाला देवी, हन्दवाड़ा में भद्रकाली, उत्तरसू उमानगरी में उमादेवी, मार्तण्ड में सूर्य देव एवं शारदा में स्थित शारदा बल (शारदा की स्थापना) या शारदा माता मन्दिर आदि। शारदा कश्मीर के पश्चिम में स्थित सम्पूर्ण भारत के हिन्दुओं के प्राचीनतम तीर्थों में एक है।

शारदा गाँव श्रीनगर से 130 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है और मुजफ्फराबाद से शारदा तक की दूरी लगभग 140 किलोमीटर है। यह गांव ज़िला मुज़फ्फराबाद के तहसील अट्टमुकाम (AUTHMUQAM) में पड़ता है। हिन्दू राज्य काल में शारदा गांव दो कारणों से प्रसिद्ध था।

अ) शारदा माता का निवास स्थान

आ) शारदा पीठ (शारदा अध्ययन केन्द्र)

आज शारदा माता का यह निवास स्थान पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर के भू–भाग में आता है। यहां देश विभाजन के पूर्व हर वर्ष भाद्रपद (भादों का महीना) शुक्लपक्ष अष्टमी के दिन वार्षिक उत्सव मनाया जाता था जिसका शुभारम्भ भाद्रपद शुक्लपक्ष चतुर्थी के दिन होता था। हज़ारों की संख्या में भक्तजन अखण्ड भारत के कोने–कोने से देवी

दर्शन के हेतु आते थे। इसी दिन हरमुकुट गंगा पर भी वार्षिक धार्मिक पर्व मनाया जाता है। इसीलिए भादों की शुक्लपक्ष अष्टमी को गांगाष्टमी (गंग अऽठम) या शारदाष्टमी (शारदा अऽठम) कहते हैं। भाद्रपद शुक्लपक्ष अष्टमी को वैष्णव लोग भगवान श्री कृष्ण की प्रेयसी राधिका जी का जन्मोत्सव मनाते हैं। इसलिये कहीं-कहीं इसे राधाअष्टमी भी कहते हैं।

o

कश्मीर में कुपवाड़ा से लगभग डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर दो गांव हिन्दू सांस्कृतिक इतिहास की दृष्टि से पर्याप्त चर्चित रहे हैं-टिक्कर एवं गुशी। टिक्कर से लगभग 40 किलोमीटर की दूरी पर शारदा गांव किशन गंगा घाटी में पड़ता है।

हिन्दू राज्यकाल में शारदा का तीर्थ स्थल पर्याप्त ख्यातिप्रद रहा लेकिन कालचक्र के चलते स्थिति बदलती गई और ऐतिहासिक दुर्घटनाओं के कारण अल्पसंख्यकों को इस क्षेत्र से पलायन करना पड़ा। स्वतंत्रता से पूर्व इस गांव में कई पण्डित परिवार रहते थे जो या तो पुरोहित वर्ग से सम्बंधित थे या व्यापारी थे जो तीर्थ के निकट दुकानदारी करते थे और तीर्थ से जुड़े कुछ साधु-संत लोग और उनके शिष्य या सेवक भी यहां रहते थे।

देश विभाजन के समय देवी का यह शक्ति पीठ भक्त-जन-विहीन हो गया।

o

टिक्कर से शारदा तक पहुंचने के दो मार्ग हैं। यात्री एवं भक्तजन टिक्कर से मुरहामा, मुरहामा से जमगण्ड और जमगण्ड से शारदा पहुंचते

थे। अथवा दूसरे मार्ग पर चलकर टिक्कर से बटपोरा, बटपोरा से गुथामडूर, गुथाम डूर से थैयन (THAIJAN) और थैयन से शारदा पहुंचते थे। संलग्न मार्ग दर्शक रेखा चित्र (कृपया साथ लगा रेखा चित्र देखिये) पाठकों की जिज्ञासा को शान्त करने के लिये पर्याप्त होगा। श्रीनगर से सोपुर, सोपुर से हन्दवाड़ा होते हुए टिक्कर–कुपवाड़ा पहुंचते हैं और फिर वहां से शारदा तक पहुंचने के विविध पहाड़ी मार्गों को देखा जा सकता है। तीसरा रास्ता मुजफ्फराबाद से सीधे अट्टमुकाम तहसील के मुख्यालय से होता हुआ शारदा पहुंचता है। सन् 1947 ई. से पहले कुछ लोग बारहमूला से उड़ी, उड़ी से मुजफ्फराबाद होते हुए शारदा पहुंचते थे। शारदा गांव में स्थित शारदा माता का मन्दिर किशनगंगा (दरिया–ए–नीलम) के बाएं किनारे पर वहां स्थित है जहां मधुमती नदी का मिलन किशनगंगा के साथ होता है।

O

संस्कृत भाषा में 'शारदा' शब्द सरस्वती एवं दुर्गा दोनों का वाचक है। एक प्रकार की वीणा (वाद्य यंत्र) भी शारदा कहलाती है। सरस्वती तो ज्ञान, विवेक और विद्या की देवी है और दुर्गा सती या पार्वती का रूप है।

विश्वास यह है कि पार्वती ने ही देवताओं की प्रार्थना पर असुरों के संहार हेतु दुर्गा का रूप धारण किया। रू–रू नामक दैत्य के पुत्र दुर्ग का वध करने के कारण इन का नाम दुर्गा पड़ा।

प्राचीन काल से ही कश्मीर ज्ञान, विद्या, तर्क एवं शास्त्र अध्ययन का केन्द्र रहा है। यही कारण है कि कश्मीर को शारदा पीठ (a seat), शारदा भूमि, शारदा नगरी तक कहा गया है। अभिप्राय यह है कि

कश्मीर में शारदा को विद्या की देवी के रूप में ही 'नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः' कहते चले आये हैं।

भादों की अष्टमी को यहां पितृ श्राद्ध भी होता था और अस्थि विसर्जन भी। यहां किशनगंगा और मधुमती का संगम (नदियों का मिलन) है। इस तीर्थ के साथ कई पौराणिक कथाएं जुड़ी हैं। जिनमें से कुछ का उल्लेख करना यहां असंगत नहीं होगा।

अ भक्तजनों को विश्वास है कि देवताओं द्वारा समुद्र मंथन के बाद अमृत कलश से अमृतपान करके शेष बचा हुआ अमृत, कलश के साथ माता शारदा ने ग्रहण किया और षष्ठ भुजा रूप धारण करके अमृत कलश के साथ शारदा गांव पहुंची और यहां अमृत कलश पृथ्वी के गर्भ में रखा और स्वयं समतल शिला रूप धारण करके उसे ढक लिया। इसी समतल शिला को देवी रूप मानकर लोग पूजा अर्चना करते रहे और परवर्ती काल में उसके ऊपर मन्दिर का निर्माण हुआ। अनुमान यह है कि हिन्दू राज्यकाल में दसवीं शती के आसपास सर्वप्रथम इस मन्दिर का निर्माण हुआ है। यह मत विवादास्पद है क्योंकि आठवीं शाताब्दी ई. में राजा ललितादित्य के समय में भी शारदा मन्दिर का उल्लेख मिलता है। कुछ प्रमुख विदेशी यात्री कश्मीर आए, जिन्होंने अपने सफरनामों में शारदा मन्दिर का उल्लेख किया है। चीनी यात्री हयूनसांग 632ई. में कश्मीर आए और दो वर्ष यहां रहे उन्होंने लिखा है कि शारदा में असाधारण प्रतिभावान और कुशाग्र बुद्धि के पण्डितों को स्वयं वे देख चुके हैं जिनका आध्यात्मिक सोच में प्रसंसनीय योगदान रहा है।

o

आ एक दिन महर्षि वसिष्ठ ने अपनी पत्नी अरुंधती से पुत्रवती होने के हेतु माघमास में पूर्णमासी तक उपवास करके भगवान शिव की उपासना करने का सुझाव दिया। यह बात किसी तरह एक निम्न जाति के एक व्यक्ति ने सुनी जो स्वयं पुत्र प्राप्ति के हेतु व्यग्र था। उसने भी अपनी पत्नी को उपवास रखकर शिवोपासना करने का सुझाव दिया। उन्हें सिद्धि प्राप्त हुई और एक पुत्ररत्न ने उनके घर में जन्म लिया जिस का नाम शांडिल्य रखा गया। कहते हैं ब्राह्मणों ने उसका यज्ञोपवीत संस्कार करने से इंकार किया और महर्षि वसिष्ठ के कहने पर वे भारत के उत्तराखण्ड मे स्थित शारदा माता के दर्शनार्थ रवाना हुए। कुपवाड़ा से गुशी पहुंचे जहां उन्हें अनाहत नाद (योगियों को सुनाई देने वाली एक आन्तरिक ध्वनि, ओ३म् ध्वनि) सुनाई दिया और वे बटपोरा के मार्ग से गुथमडूर से होकर थैयान पहुंचे और शारदा के निकट कुंड में स्नान करने से उन का आधा शरीर सोने का हो गया और माता रानी के दर्शन पाकर सिद्ध पुरुष बन कर शांडिल्य मुनि के नाम से प्रसिद्ध हुए।

श्री श्री शैल स्थिता या प्रहसित वदना,

पार्वती शूल हस्ता,

वह्नि सूर्येन्दु नेत्रा

त्रिभुवनजननी षड्भुजा सर्व शक्तिः।

शाण्डिल्येनोपवीता जयति भगवती

भक्तिगम्या नतानाम्‌

सा नः सिंहासनस्था ह्यभिमत फलदा

शारदा शं करोतु। (श्री शारदा सहस्रनाम स्तोत्रम्) से उद्धृत

The goddess Sharda is seated on an auspicious seat of stone, she has a smiling look, she resembles Parvati having sword in one of his arms and her eyes enlighten like sun, moon and fire. She is the life of the three worlds, having six hands, she is entire energy. She has been invested with sacred thread by Shandalya Saint. Let us hail that cosmic light. She can be attained by devotion.

May she be giver of our desires and bestow peace-eternal on aspirants.

(Translation by 'Suman')

भगवन् या महादेवी शारदाख्या सरस्वती।

काश्मीरस्यां स्वतपसा शाण्डिल्ये नावतारितां।।

तस्यानाम सहस्त्रं मे भोगमोक्षैक साधनम्।

साधकानां हितार्थाय वदत्वं परमेश्वर।।

इ कहते हैं कश्मीर के एक हिन्दू राजा महेश कर्ण (मनकन) ने यहां एक भव्य मन्दिर का निर्माण किया है। महेश कर्ण के विषय में यह बात प्रसिद्ध है कि उनके दोनों कान भैंस के कानों के समान थे। वे मन ही

मन अपने भद्दे रूप पर लज्जित थे। नाई के द्वारा उनके महिषी (महिषी सं. भैंस) (कश्मीरी–माऽश) कानों का समाचार जनता तक पहुंचा और इस कारण वे अधिक व्याकुल हो उठे। कहते हैं कि स्वप्न में उन्हें किसी दिव्य शक्ति ने शारदा पहुंचने का परामर्श दिया। वे माता की शरण में पहुंचे और उनके दोनों कान मनुष्य–कर्ण में बदल गये इसी लिये कश्मीर में यह कहावत प्रसिद्ध है कि–

'मनकन राजस मोशे कन

शारदायि यलि गछि तेलि बलहन।'

इस प्रकार शारदा ऋद्धि (सम्पन्नता) एवं सिद्धि प्राप्ति का देवी गृह (देव स्थान) माना जाता है।

'इष्टेश्वरी महादेवी सर्वभय विनाशनी।

अष्ट सिद्धि महास्थानम् सिद्धयन्ति शारदे नमः।।

o

जगत गुरु शंकराचार्य (8–9वीं शताब्दी) को भी माता के दर्शन यहां हुए थे। कश्मीर के शासक महाराजा ललितादित्य यहां दर्शन करने के लिये कई बार आये हैं। 13वीं शताब्दी ई. में वैष्णव सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य रामानुज यहां पहुंचे हैं।

कश्मीर के प्रसिद्ध मुस्लिम शासक सुलतान जैन–उल–आब्दीन (1420–1470 ई., असली नाम शाही खान) भी यहां सफलता का वरदान पाने के हेतु दर्शनार्थ आये थे। इतिहासकार जोनराज ने इस तथ्य का

उल्लेख किया है कि 1422ई. में सुलतान जैन–उल–आब्दीन शारदा देवी की यात्रा पर गये थे। डोगरा शासन काल (1846–1947) में यह तीर्थ पर्याप्त प्रसिद्ध हुआ। इस युग में मन्दिर की प्रबंध व्यवस्था सरकार के हाथ में थी। महाराजा गुलाब सिंह (1792–1856) ने इस तीर्थ के हेतु बहुत बड़ी जागीर दान की थी ताकि तीर्थ स्थान के साथ–साथ शारदापीठ में अध्ययन कर रहे विद्वानों और छात्रों के निवास की भी समुचित व्यवस्था हो सके।

प्रसिद्ध फारसी विद्वान अलबरोनी (Al beruni) जिन्हें मुहम्मद गज़नी अपने साथ भारत लाये थे और जो भारत के उत्तर–पश्चिम में कई वर्षों तक रहे और जिन का देहान्त 1048 ई. में 75 वर्ष की अवस्था में हुआ, ने अपनी पुस्तक 'तहकीक–ए–हिन्द' में लिखा है कि भारत में हिन्दुओं के प्रसिद्ध तीर्थों में मुलतान के प्रसिद्ध सूर्य मन्दिर के बाद शारदा मन्दिर का नाम आता है। प्रसिद्ध अंग्रेज शोधकर्ता सर एम.ए. स्टेन (Sir M.A. Stein) जिन्होंने कल्हण पण्डित की 'राजतरंगिणी' का अनुवाद अंग्रेजी भाषा में किया और जो दो भागों में (Chronicles of the Kings of Kashmir) शीर्षक से सन् 1900 ई. में प्रकाशित हुआ, का मानना है कि शारदा मन्दिर की पूर्व दिशा में लगभग एक मील की दूरी पर एक समतल भू–खण्ड है जहां कुछ ऐतिहासिक भग्नावशेष (Remains, Ruins) भी मिले हैं, वहीं अध्ययन–अध्यापन का प्रसिद्ध विद्या केन्द्र हिन्दू राज्यकाल में विद्यमान था जिसे कुछ लोग शारदा विश्वविद्यालय कहते हैं जहां वेद–शास्त्रों की विधिवत शिक्षा देने की पूर्ण व्यवस्था थी।

बंगाल के गौड़ ब्राह्मण एवं कांशी के यशस्वी ब्राह्मण विद्या प्राप्ति के हेतु एवं शास्त्राध्ययन के लिये यहां आते थे और यहां से विधिवत

शिक्षा ग्रहण करके विशारद (कुशल, अनुभवी, विद्वान, Learned) की डिग्री (उपाधि) पाकर लौट जाते थे।

o

इस महान विद्यापीठ में गुरुकुल परम्परा का दृढ़ता से पालन किया जाता था। देश के भिन्न–भिन्न क्षेत्रों से वेद, तर्क शास्त्र, साधना काव्य शास्त्र शैवमत, ज्योतिष विद्या, षठ्दर्शन एवं शारदा–लिपि का अध्ययन करने के हेतु विद्वान यहां आते थे और निश्चित समयावधि तक रह कर विद्यालाभ प्राप्त करते थे। पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक समाप्त करने पर प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी योग्यता का प्रमाण देना होता था। आज इसे ही मौखिक परीक्षा (Viva Voce) कहते हैं। सफल स्नातकों को विद्यापीठ की ओर से विशारद की डिग्री प्रदान की जाती थी और इस हेतु दीक्षान्त समारोह का आयोजन (Convocation) प्रति वर्ष गौरी तृतीया (माघ शुक्ल पक्ष तृतीया) के दिन होता था। कल्हण पण्डित ने 12वीं शताब्दी ई. में अपनी राजतरंगिणी (1148–49ई.) में इस विद्या पीठ का विशद वर्णन किया है।

डॉ. मैक्समूलर ने लिखा है कि शारदा पीठ भारत में ख्यातिप्राप्त संस्थान रहा है। लोग यहां भारतीय षट् दर्शनों का अध्ययन करने के हेतु भिन्न–भिन्न क्षेत्रों से आते थे। 13वीं शताब्दी में वेदान्त के महान विद्वान आचार्य रामानुज भी केरला प्रदेश से यहां आये थे। श्री एस.एन. ज़ाडू 'सुमन' ने अपने एक परिचय–पत्र में इस का उल्लेख किया है।

o

कश्मीरी पण्डितों द्वारा आविष्कृत एक स्वतंत्र लिपि का नाम शारदा

है जिस की व्युत्पत्ति ब्राह्मी लिपि से हुई है। शारदा पीठ के प्रवेश द्वार के निकट इस लिपि के लिपि–चिह्न एक विशाल समतल शिला–पट्ट पर उत्कीर्ण किये गये थे और प्रत्येक आगन्तुक की दृष्टि इन लिपि चिह्नों पर अवश्य पड़ती। इसी शारदा लिपि में लिखित सैंकड़ों हस्तलिखित ग्रन्थ आज हमें पूना (महाराष्ट्र) के भंडारकर शोध संस्थान में देखने को मिलते हैं। हज़ारों पांडुलिपियां मुस्लिम शासनकाल में क्रूर शासकों द्वारा वितस्ता में बहा दी गई और विस्थापन काल तक अर्थात 1989ई. तक हज़ारों पांडुलिपियां घाटी के विविध इलाकों में पण्डितों के घरों में सुरक्षित थीं। विस्थापन के समय आतंकी हाहाकार में न पण्डित रहे और न रही उन की यह संचित पूंजी।

महाराजा अशोक (273ई.पू. – 232 ई. पू.) के राज्यकाल से लेकर 16वीं शताब्दी तक इस लिपि के कश्मीर में प्रचलित होने के प्रमाण मिले है। प्रसिद्ध इतिहासज्ञ जोण राज ने अपना इतिहास शारदा में लिखा था। यह लिपि कश्मीर में प्रचलित थी और अध्ययन–अध्यापन का माध्यम थी। शारदा पीठ में प्रवेश पाते ही विद्यार्थियों को इस लिपि का ज्ञान कराया जाता था और इसी के माध्यम से विविध शास्त्रों और ज्ञान की अन्य शाखाओं का अध्ययन होता था। पाणिनि के विश्व प्रसिद्ध व्याकरण ग्रन्थ 'अष्टाध्यायी' की सहज व्याख्या अर्थात टीका के रूप में शारदा लिपि में 'कलाप' (संस्कृत व्याकरण का सार) नामक ग्रन्थ की रचना हुई है जो इस लिपि में लिखा गया प्राचीनतम ग्रन्थ माना जाता है, ऐसा श्री एस.एन. ज़ाडू 'सुमन' ने 'शारदा का पवित्र तीर्थ' नामक परिचय–पत्र में लिखा है। यह परिचय–पत्र अंग्रेज़ी भाषा में है।

देश विभाजन के समय मन्दिर परिसर में एक भव्य पुस्तकालय एवं गोष्ठी–कक्ष मौजूद थे। पुस्तकालय में वेद, षट् दर्शन शिवमत एवं

ज्योतिष विद्या से सम्बंधित अलभ्य ग्रन्थ एवं शारदा लिपि में लिखित पांडुलिपियां सुरक्षित थीं। पूर्वयोजित षड़यंत्र के अंतर्गत शताब्दियों से संचित इस ज्ञान भंडार को नष्ट किया गया। समय के भीषण आघातों के परिणाम स्वरूप सब कुछ ध्वस्त हुआ। इस प्रकार हम कश्मीर के प्राचीनकालीन हिन्दू इतिहास के प्रामाणिक तथ्यों से वंचित हो गये।

o

मन्दिर के चारों ओर ग्यारह फुट ऊंची दीवार है जो किशनगंगा के किनारे से और भी अधिक ऊंची दिखाई देती है क्योंकि मन्दिर तनिक ऊंचाई पर पर्वत की टेकरी (ऊंची भूमि, छोटी पहाड़ी) पर स्थित है। मन्दिर तक 64 (चौंसठ) सीढ़ियां हैं जो 64 योगिनियों (64 देवियों) के नाम से जानी जाती हैं ऐसा स्वामी सच्चिदानन्द पुरी (सन्यास आश्रम बाँडिपुर कश्मीर) का मानना है। मन्दिर परिसर के बीच में मुख्य मन्दिर स्थित है जिसका वास्तु–शिल्प (Architecture) कश्मीर के अन्य प्राचीन मन्दिरों के ही समान है। मन्दिर का मुख्य द्वार पश्चिम दिशा में है और भीतरी प्रवेश के हेतु सीढ़ियों का प्रयोग करना पड़ता है। भीतर मध्य में एक समतल सपाट (Flat) शिला है जो सात फुट लम्बी और छः फुट चौड़ी है और छः इंच मोटी है। कहते हैं यही शिला उस अमृत कुंड को ऊपर से ढक रही है जिसमें माता शारदा का वास है। यात्री यहां पहुंच कर इसी शिला को पूजते हैं और शिला देवी (मां शारदा) के दर्शन पाकर संतुष्ट होते हैं। मन्दिर परिसर का मुख्यद्वार दक्षिण–पश्चिम की ओर स्थित है। शिला देवी के परिसर में प्रवाहित जल–सोत (Spring) के सम्मुख काली चट्टान पर मां सरस्वती की प्रतिमा उत्कीर्ण थी जो हिन्दू राज्यकाल के भव्य मूर्तिशिल्प का ऐतिहासिक साक्ष्य होने के साथ–साथ

शारदा भूमि की बौद्धिक सम्पदा–तत्त्वज्ञान, व्यवहार ज्ञान, तर्क तथा विवेक–का प्रतीक चिह्न भी था। मन्दिर के भीतर समतल चट्टान के अतिरिक्त कोई मूर्ति नहीं है।

O

शारदा का मन्दिर षट् कोणाकार है (Hexa Angular) जो मां शारदा की छः अलौकिक शक्तियों अथवा गुणों का द्योतक है यह छः शक्तियां निम्नलिखित हैं–

1. मां सर्वव्यापक है।
2. मां अपने आप में परिपूर्ण दिव्य विभूति हैं।
3. मां चेतना स्वरूप प्रज्ञा का साक्षात् रूप है।
4. मां सर्व शक्तिमान है।
5. मां असीम दिव्य शक्ति का अद्भुत भण्डार है।
6. मां सर्व सिद्धिदायिन् है।

यही कारण है कि मां षटभुजा है। मां विशुद्ध ज्ञान और विवेक की देवी है। प्रसन्न होकर भक्तजनों को विवेक प्रधान हंस बुद्धि का वरदान देती है ताकि वे सत् और असत् के मध्य विवेक की दृष्टि से स्पष्ट अन्तर देख सके। मां शारदा का वाहन हंस है।

शताब्दियों से कश्मीर ज्ञान और विज्ञान का आदि स्रोत रहा है। यहां के महान संस्कृत विद्वानों, काव्य शास्त्रियों, शैव दर्शन के पण्डितों, तर्क शास्त्र के सिद्ध पुरुषों, ज्योतिषाचार्यों एवं इतिहासज्ञों को कौन नहीं जानता।

मां शारदा कश्मीर की इसी जाज्वल्यमान बौद्धिक सम्पन्नता का प्रतीक है। ज्ञान, विवेक और वाक् शक्ति ही ब्राह्मण की सबसे बड़ी पूंजी

है। निष्ठा और सतत साधना से ही वह मां की अनुकम्पा का भागीदार बन सकता है क्योंकि मां ज्ञान और विवेक का केन्द्रित शक्ति स्त्रोत है।

o

भृंगीष (शिव) संहिता में भी इस तीर्थ का विशद् वर्णन हुआ है। दुर्गा सप्तशती में शारदा के महात्म्म की सविस्तार चर्चा हुई है। इसे विद्या की देवी, ज्ञान का स्त्रोत, सर्वसिद्धि दायिनी महाशक्ति के रूप में स्वीकारा गया है। जिसका पुष्पार्चन करते अथवा यज्ञाहुति देते समय पाठ होता है। कलूसा बांडीपुर–कश्मीर में भी जगद्अम्बा शारदा माता का मन्दिर है जहां प्रतिवर्ष भाद्र शुक्ल अष्टमी के दिन यज्ञ रचाया जाता था। यहां से भी 'सहस्रनाम पाठावली' का प्रकाशन स्वर्गीय गोविन्दानन्द जी के द्वारा हुआ है जिसके लेखक कलूसा के सर्वानन्द जी ह। सन् 1994 ई. में विस्थापन के बाद स्वामी सच्चिदानन्द पुरी ने' श्री शारदा सहस्त्र नामावली' को प्रकाशित करवाया है।

o

शारदा का तीर्थ स्थल कई महान सन्तों, योगियों एंव तपस्वियों की तपस्या भूमि रही है। स्वामी लाल जी महाराज तथा उनके महान शिष्य स्वामी नन्दलाल जी महाराज को यहीं पर सिद्धि प्राप्त हुई है। यह देवी मां का ही वरदान था जिसे पाकर स्वामी नन्द लाल जी का जीवन धन्य हो उठा। स्वामी जी कश्मीर के कई महान सन्तों एवं महापुरूषों के पथ प्रदर्शक एवं साधना गुरु रहे हैं जिन में स्वामी क्रालबब जी, स्वामी मस्तराम जी, स्वामी विभीषण जी, स्वामी स्यद्धबब् जी एवं स्वामी बऽई टोठ जी उल्लेखनीय हैं। स्वामी नन्द लाल जी अपनी कृपा–दृष्टि एवं सुहृद् व्यवहार के कारण इलाके में पर्यापत

चर्चित रहे है और हिन्दुओं के अतिरिक्त सैंकड़ों मुसलमान उनके आश्रम में आकर मनोकामना सिद्धि का वरदान पाते। सन् 1947 ई० में कबाइली आक्रमण के समय वे शारदा में मौजूद थे।

स्वामी आफताब जी भास्कर (देहान्त 1960 ई०) जो कारिहामा (ज़िला कुपवाड़ा) के निवासी थे, को माता शरादा के चरणों में रह कर ही दिव्य ज्योति का आभास हुआ है। वे लगातार वर्षों माता की सेवा में रत रहे और पूरी निष्ठा और संकल्प के साथ साधना के विभिन्न पड़ावों से होते हुए चरम सीमा की ओर उन्मुख हुए।

o

शरदा के आसपास के गांव में गुर्जर और पहाड़ी लोग रहते थे लेकिन उन्हें भी शिला देवी के इस शक्ति पीठ पर अटूट विश्वास था और फसल की कटाई के समय वे मन्दिर परिसर में माता के नाम पर अनाज (यथाशक्ति) छोड़ आते थे। कृष्ण गंगा में गाय के शुद्ध दूध का विसर्जन करते थे और मन्दिर के पुजारियों और भक्तजनों के लिये भी छोड़ आते।

सामान्य मुस्लिम जन समुदाय के अतिरिक्त कई मुसलमान सन्त फकीर भी यहां अपनी उपस्थिति दर्ज कराने के हेतु तथा शिला देवी के दर्शनार्थ आते और कुछ दिन इस परमधाम में निवास करके लौट जाते। शैव पण्डितों के 'सहजभाव' ने उन्हें भी मोह लिया था।

o

देश विभाजन के पश्चात् इस पावन तीर्थ स्थल की क्या दशा रही है, कुछ ज्ञात नहीं। आवश्यकता इस बात की है कि इच्छुक भक्तजनों को भविष्य में यहां यात्रा के हेतु जाने की अनुमति मिल

जाये ताकि इस सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करते हुए हम देवी मां के चरणों पर श्रद्धा के सुमन अर्पित कर सकें।

थैयन से शारदा की दूरी 5 (पांच) किलोमीटर से अधिक नहीं लेकिन यह हमारा कितना दुर्भाग्य है कि हम युद्ध विराम रेखा के इस पार थैयन तक जा सकते है लेकिन केवल पांच किलोमीटर की दूरी पर स्थित थैयन से युद्ध विराम रेखा के उसपार नहीं जा सकते। मां के दरबार में हर वर्ष हाज़िरी देने का अवसर मिल सके, राजनीतिक स्तर पर इस दिशा में प्रयास करने की आवश्यकता है। यदि देश के सिक्ख बन्धु जत्थों में हर वर्ष नानकाना साहब की यात्रा पर पाकिस्तान जा सकते हैं तो हिन्दुओं का शारदा जाने में किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिये।

o

शारदा का अपना भव्य इतिहास है। प्राचीनकाल का एक पावन तीर्थ स्थल, दिव्य शक्तियों का शक्ति पीठ, ऋषि–मुनियों की तपस्या भूमि, ब्रह्मज्ञानी समाज की ज्ञान साधना का प्रमुख केन्द्र, शिला देवी का तीर्थ, किशनगंगा और मधुमती के संगम का साक्ष्य आज खण्डहरों में जी रहा है। जाने कब इतिहास करवट बदल लेगा और पतझड़ी यादों में बहार खिल उठेगी। वह युग निस्सन्देह हमारे सांस्कृतिक पुनर्जन्म का युग होगा जब वेद मंत्रों के पावन उच्चारण से दिशायें गूंज उठेंगी और 'अनलहक' नाद से वातावरण आनन्द रस छलकाता प्रतीत होगा।

नमस्ते शारदे देवी कश्मीर पुरवासिनी।

त्वामहं प्रार्थये नित्यं विद्यां ज्ञानंच देहि मे।।

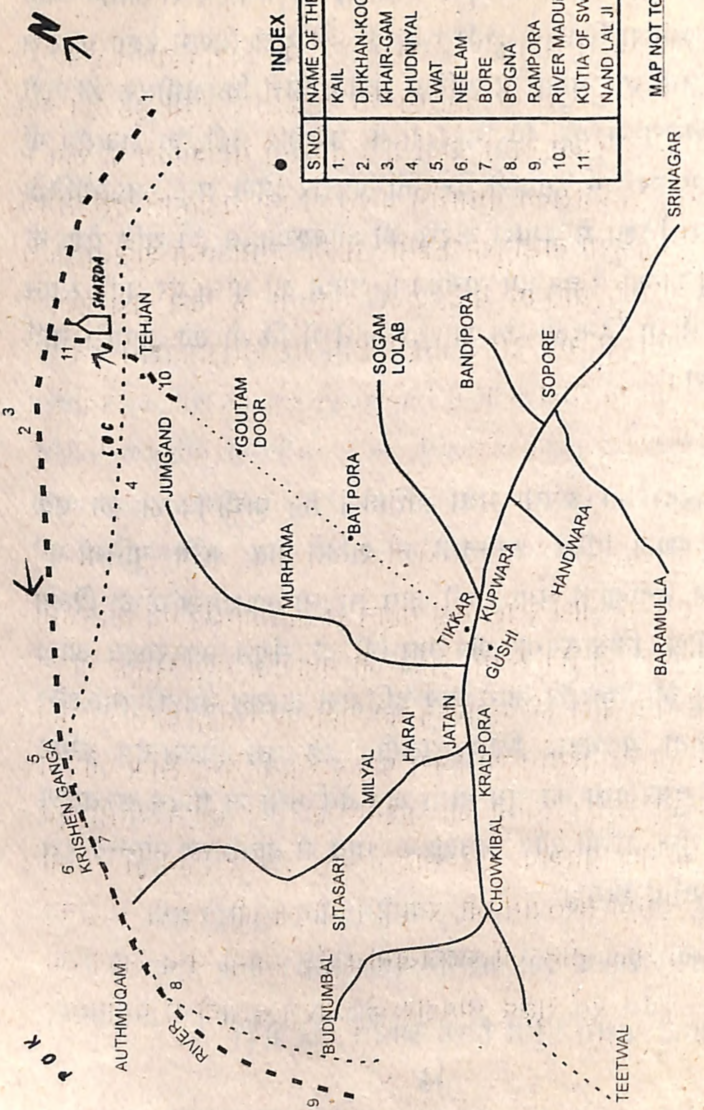

INDEX

S.NO.	NAME OF THE VILLAGES
1.	KAIL
2.	DHKHAN-KOOT
3.	KHAIR-GAM
4.	DHUDNIYAL
5.	LWAT
6.	NEELAM
7.	BORE
8.	BOGNA
9.	RAMPORA
10.	RIVER MADUMATI
11.	KUTIA OF SWAMI NAND LAL JI

MAP NOT TO SCALE

INDEX-PLAN-SHOWING LOCATION OF SHARDA-MATTA TEMPLE IN PAKISTAN OCCUPIED KASHMIR TEHSIL-AUTHMUQAM

DISTANCE FROM SRINAGAR TO SHARDA - ABOUT 130 KMS
DISTANCE FROM MUZFARABAD TO SHARDA - ABOUT 140 KMS

Sanjeevani Sharda Kendra
Anand Nagar, Jammu Ph. 0191-2501480
shardakendra31@rediffmail.com

संजीवनी शारदा केन्द्र
कार्यक्षेत्र एवं लक्ष्य

1. सांस्कृतिक केन्द्र की स्थापना।
2. व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्रों की व्यवस्था।
3. शोधकार्य-इतिहास और संस्कृति के संदर्भ में।
4. एक भव्य पुस्तकालय की स्थापना।
5. जनहित कार्यक्रमों का आयोजन।
6. प्रमुख धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक उत्सवों का सामूहिक आयोजन।
7. संजीवनी भवन का निर्माण।
8. शारदा-लिपि का पठन-पाठन एवं लेखन।
9. संस्कृत भाषा में संभाषणार्थ कक्षाओं का आयोजन।

Printed at :

M. K. ENTERPRISES

JK Colony, Paloura Top, Jammu. Ph. : 2592997